उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग

सम्मिलित राज्य अभियंत्रण सेवा परीक्षा

विषय

सामान्य हिन्दी

सविस्तृत

MADE EASY Publications

MADE EASY Publications Pvt. Ltd.

Corporate Office: 44-A/4, Kalu Sarai (Near Hauz Khas Metro Station), New Delhi-110016
E-mail: infomep@madeeasy.in
Contact: 9021300500
Visit us at: www.madeeasypublications.org

उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग (सम्मिलित राज्य अभियंत्रण सेवा परीक्षा)
विषय : सामान्य हिन्दी

© Copyright, by MADE EASY Publications Pvt. Ltd.
All rights are reserved. No part of this publication may be reproduced, stored in or introduced into a retrieval system, or transmitted in any form or by any means (electronic, mechanical, photo-copying, recording or otherwise), without the prior written permission of the above mentioned publisher of this book.

प्रथम संस्करण : 2020
द्वितीय संस्करण : 2021
तृतीय संस्करण : 2022
पुनर्मुद्रण : 2023
पुनर्मुद्रण : 2024

MADE EASY Publications Pvt. Ltd. has take due care in collecting the data and providing the solutions, before publishing this book. Inspite of this, if any inaccuracy or printing error occurs then MADE EASY PUBLICATIONS owes no responsibility. MADE EASY PUBLICATIONS will be grateful if you could point out any such error. Your suggestions will be appreciated.

© All rights reserved by MADE EASY PUBLICATIONS Pvt. Ltd. No part of this book may be reproduced or utilized in any form without the written permission from the publisher.

प्रस्तावना

B. Singh (Ex. IES)

अधिकतर प्रतियोगी परीक्षाओं, खासकर राजकीय लोक सेवा आयोगों द्वारा आयोजित परीक्षाओं में हिन्दी विषय का विशेष स्थान है। यह विषय हमेशा से अभ्यर्थियों को इन परीक्षाओं में सफलता दिलाने में सहायक रहा है।

यह सामान्य हिन्दी पुस्तिका उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग (UPPSC) (सम्मिलित राज्य अभियंत्रण सेवा परीक्षा-2021) को ध्यान में रखकर तैयार की गयी है। इस पुस्तक में इस परीक्षा के पाठ्यक्रम के सभी पहलुओं का समावेश करते हुए इसके प्रत्येक प्रकरण को सरल एवं सुबोध शैली में प्रस्तुत किया गया है। इसमें संधि, समास, उपसर्ग, पर्यायवाची-विलोम शब्द, शब्द-शुद्धि, वाक्य-शुद्धि, मुहावरे-लोकोक्तियाँ, सहित व्याकरण के अन्य महत्वपूर्ण पहलुओं को भी शामिल किया गया है।

यह पुस्तक स्वयं में सम्पूर्ण है और हिन्दी की परीक्षा की दृष्टि से यह ध्यान रखा गया है कि इसमें सभी आवश्यक तथ्यों को शामिल किया जाए।

हमें आशा और विश्वास है कि यह पुस्तिका अभ्यर्थियों के लिए उपयोगी व ज्ञानवर्धक सिद्ध होगी और उनका सही दिशा में मार्गदर्शन करेगी। पुस्तक की उत्कृष्टता बढ़ाने के लिए आपका बहुमुल्य सुझाव आमंत्रित है।

शुभकामनाओं सहित धन्यवाद

B. Singh

CMD, MADE EASY Group

विषय-सूची

सामान्य हिन्दी

अध्याय 1 हिन्दीः एक संक्षिप्त परिचय 1

भाषा........ 1
हिन्दी भाषा का विकास........ 1
वर्ण का स्वरूप........ 2
हिन्दी के स्वरवर्ण........ 3
हिन्दी के व्यंजनवर्ण........ 3
विराम चिन्ह........ 4
विराम चिन्ह के भेद........ 4
शब्द रचना........ 5
व्याकरणिक प्रकार्य के आधार पर शब्द भेद........ 6
विकारी शब्द........ 6
संज्ञा........ 6
संज्ञा के भेद........ 6
संज्ञा के रूपांतर........ 7
सर्वनाम........ 8
विशेषण........ 9
क्रिया........ 9
काल........ 10
अविकारी शब्द........ 11
समुच्यबोधक........ 11
क्रियाविशेषण........ 11
सम्बन्धबोधक........ 12
विस्मयादिबोधक........ 12
वाक्य रचना........ 12
वाक्यांश........ 12
वाक्य के भेद........ 12
वस्तुनिष्ठ प्रश्नकोष........ 14

अध्याय 2 संधि 17

संधि........ 17
स्वर संधि........ 17
दीर्घ संधि........ 17
गुण संधि........ 18
वृद्धि संधि........ 19
यण् संधि........ 19
अयादि संधि........ 20
व्यंजन संधि........ 20
विसर्ग संधि........ 22
वस्तुनिष्ठ प्रश्नकोष........ 23

अध्याय 3 समास 27

समास....27
समास के प्रकार....27
अव्ययीभाव समास....27
तत्पुरुष समास....28
उपपद तत्पुरुष....28
लुप्तपद तत्पुरुष....29
नञ् समास....29
द्विगु समास....29
कर्मधारक समास....30
द्वन्द्व समास....30
बहुब्रीहि समास....31
वस्तुनिष्ठ प्रश्नकोष....23

अध्याय 4 उपसर्ग एवं प्रत्यय 35

उपसर्ग....35
उपसर्ग के प्रकार....35
संस्कृत के उपसर्ग....35
हिन्दी के उपसर्ग....36
विदेशी उपसर्ग....37
प्रत्यय....38
प्रत्यय के प्रकार....38
कृदन्त प्रत्यय....39
तद्धित प्रत्यय....39
उर्दू के प्रत्यय....40
वस्तुनिष्ठ प्रश्नकोष....41

अध्याय 5 पर्यायवाची एवं विलोम शब्द 45

पर्यायवाची शब्द....45
विलोम शब्द....48
वस्तुनिष्ठ प्रश्नकोष....56

अध्याय 6 लिंग, वचन एवं कारक 57

लिंग....57
लिंग के प्रकार....57
पुल्लिंग....60
पुल्लिंग शब्द की पहचान....60
स्त्रीलिंग....60
स्त्रीलिंग शब्द की पहचान....60
वचन....60
कारक....62
कारक-चिन्ह स्मरण करने के लिए सूत्र....62
कारक के भेद....62
वस्तुनिष्ठ प्रश्नकोष....68

अध्याय 7 अनेकार्थी शब्द 67

अनेकार्थी शब्द....67
वस्तुनिष्ठ प्रश्नकोष....72

अध्याय 8 वाक्यांश के लिए एक सार्थक शब्द 75

वाक्यांश के लिए एक सार्थक शब्द.........................75

वस्तुनिष्ठ प्रश्नकोष...79

अध्याय 9 शब्द युग्मों का अर्थ भेद 83

शब्द युग्मों का अर्थ भेद...83

वस्तुनिष्ठ प्रश्नकोष...89

अध्याय 10 शब्द शुद्धि एवं वाक्य शुद्धि 93

शब्द शुद्धि...93

वाक्य अशुद्धि...102

अनावश्यक शब्द के कारण वाक्य अशुद्धि.............102

अनुपयुक्त शब्द के कारण....................................102

लिंग सम्बन्धी..103

वचन सम्बन्धी...103

क्रमभंग सम्बन्धी...103

कारक सम्बन्धी...103

सर्वनाम सम्बन्धी...104

क्रिया सम्बन्धी...105

मुहावरे के कारण...105

संयोजक शब्द सम्बन्धी..105

अशुद्ध वर्तनी के कारण...105

वस्तुनिष्ठ प्रश्नकोष...106

अध्याय 11 मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ 109

मुहावरे...109

मुहावरे की विशेषताएं...109

लोकोक्ति...116

लोकोक्ति शब्द का अर्थ..116

मुहावरा और लोकोक्ति में अंतर.............................116

समानता..116

वस्तुनिष्ठ प्रश्नकोष...122

अध्याय 12 तत्सम, तदभव, देशज एवं विदेशज शब्द 127

तत्सम शब्द...127

तद्भव शब्द...127

देशज शब्द...130

अरबी शब्द...131

फारसी शब्द...132

तुर्की शब्द..132

पुर्तगाली शब्द..132

वस्तुनिष्ठ प्रश्नकोष...133

वस्तुनिष्ठ अभ्यास प्रश्नकोष – 1.................................... **137 – 142**

वस्तुनिष्ठ अभ्यास प्रश्नकोष – 2.................................... **143 – 148**

वस्तुनिष्ठ अभ्यास प्रश्नकोष – 3.................................... **149 – 154**

अध्याय 1

हिन्दीः एक संक्षिप्त परिचय

भाषा

''भाषा'' शब्द संस्कृत के 'भाष्' धातु से बना है। इसका अर्थ वाणी को व्यक्त करना है। इसके द्वारा मनुष्य के भावों, विचारों और भावनाओं को व्यक्त किया जाता है।

भाषा की प्रकृति

भाषा वाक्यों से बनती है, वाक्य शब्दों से और शब्द मूल ध्वनियों से बनते हैं। इस तरह वाक्य, शब्द और मूल ध्वनियाँ ही भाषा के अंग हैं। व्याकरण में इन्हीं के अंग–प्रत्यंगों का अध्ययन–विवेचन होता है। अतएव, व्याकरण भाषा पर आश्रित है।

भाषा के विविध रूप

हर देश में भाषा के तीन रूप मिलते हैं –

1. बोलियाँ
2. परिनिष्ठित भाषा
3. राष्ट्रभाषा

बोली

जिन स्थानीय भाषाओं का प्रयोग साधारण जनता अपने समूह या घरों में करती है, उसे बोली (dialect) कहते हैं। किसी भी देश में बोलियों की संख्या अनेक होती हैं। भारत में लगभग 600 से अधिक बोलियाँ बोली जाती हैं। ये अपने–आप जन्म लेती हैं और किसी क्षेत्र–विशेष में बोली जाती हैं। जैसेः भोजपुरी, मगही, ब्रजभाषा, अवधी, मैथिली, आदि।

परिनिष्ठित भाषा

परिनिष्ठित भाषा व्याकरण से नियंत्रित होती हैं। इसका प्रयोग शिक्षा, शासन और साहित्य में होता है। किसी बोली को जब व्याकरण से परिष्कृत किया जाता है, तब वह परिनिष्ठित भाषा बन जाती है।

राष्ट्रभाषा

जब भाषा व्यापक शक्ति ग्रहण कर लेती है, तब आगे चलकर राजनीतिक और सामाजिक शक्ति के आधार पर राजभाषा या राष्ट्रभाषा का स्थान पा लेती है। ऐसी भाषा सभी सीमाओं को लाँघकर अधिक व्यापक और विस्तृत क्षेत्र में विचार–विनिमय का साधन बनकर सारे देश की भावात्मक एकता में सहायक होती है।

हिन्दी भाषा का विकास

1100 ई. के आसपास आधुनिक भाषाओं का युग आरंभ हुआ। 14वीं शताब्दी से आधुनिक भाषाओं का स्पष्ट रूप सामने आया। कुछ समय तक अपभ्रंश की प्रवृत्तियाँ आधुनिक भाषाओं में मिली–जुली रहीं, फिर धीरे–धीरे भाषा–परिवर्तन के इस संक्रांतिकाल में 'संदेशरासक', 'प्राकृतपैंगलम्', उक्ति–व्यक्ति–प्रकरण', 'वर्णरत्नाकर', 'कीर्तिलता', तथा 'ज्ञानेश्वरी' जैसे कुछ ग्रंथों की रचना हुई, जिनके अध्ययन से अपभ्रंश से प्रभावित 'पुरानी हिंदी' के कुछ रूप देखे जा सकते हैं। इस काल की भाषा को कुछ लोगों ने 'अवहट्ट' नाम से संबोधित किया है। इस काल के कवि ज्योतिरीश्वर ठाकुर, विद्यापति और वंशीधर ने तत्कालीन भाषा को 'अवहट्ट' की संज्ञा दी है। इस प्रकार अपभ्रंश के विभिन्न रूपों से हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं की उत्पत्ति हुई। ये सभी भाषाएँ सरलता की ओर हैं। मध्यकाल में हिन्दी अन्य आधुनिक भारतीय भाषाओं की तरह अपने अस्तित्व में आ चुकी थी। भाषा के रूप में हिन्दी की प्रकृति रचनात्मक है।

अध्यायवार वस्तुनिष्ठ प्रश्नकोष

हिन्दी: एक संक्षिप्त परिचय

1. भाषा की सार्थक लघुत्तम इकाई है:
(a) शब्द (b) पद
(c) ध्वनि (d) वाक्य

2. इनमें से कौन व्यंजन अल्पप्राण है?
(a) ख (b) थ
(c) क (d) फ

3. इनमें से कौन सा वर्ण स्पर्श व्यंजन नहीं है?
(a) क (b) च
(c) य (d) ट

4. निम्नलिखित ध्वनियों में कौन–सी दंत्योष्ठ्य है?
(a) थ (b) फ
(c) म (d) व

5. निम्नलिखित वर्गों में से कौन सा मूर्धन्य ध्वनियों का है?
(a) च, छ, ज, झ (b) ट, ठ, ड, ढ
(c) प, फ, ब, भ (d) त, थ, द, ध

6. 'श' ध्वनि का उच्चारण स्थान है:
(a) मूर्धन्य (b) तालव्य
(c) दन्त्य (d) ओष्ठ्य

7. निम्नलिखित में से कौन एक संयुक्त व्यंजन नहीं है?
(a) क्ष (b) ष
(c) त्र (d) ज्ञ

8. 'य, र, ल, व' किस वर्ग के व्यंजन हैं?
(a) तालव्य (b) ऊष्म
(c) अन्तःस्थ (d) ओष्ठ्य

9. 'सलमा घर जाती है' वाक्य है:
(a) सरल वाक्य (b) निषेधात्मक वाक्य
(c) आज्ञार्थक वाक्य (d) इच्छार्थक वाक्य

10. 'मेरा मित्र राकेश बहुत अच्छा चित्रकार है'– इस वाक्य में विभेद है:
(a) मेरा मित्र (b) चित्रकार
(c) बहुत अच्छा चित्रकार (d) बहुत अच्छा

11. अर्थ के आधार पर शब्द कितने प्रकार के होते हैं?
(a) 3 (b) 4
(c) 5 (d) 6

12. अविकारी शब्द क्या होता है?
(a) संज्ञा (b) सर्वनाम
(c) अव्यय (d) विशेषण

13. निम्नलिखित में विकारी शब्द कौन–सा है?
(a) आज (b) लड़का
(c) इधर (d) परन्तु

14. निम्नलिखित में संकर शब्द कौन–सा है?
(a) आतिशबाजी (b) लफंगा
(c) नारिकेल (d) चुगलखोर

15. निम्नलिखित में से संयुक्त वाक्य का चयन कीजिए–
(a) आप बताएं कि आपकी समस्या क्या है?
(b) मैं तुम्हारे साथ व्यापार करना चाहता हूँ।
(c) उसने खाना खाया और सो गया।
(d) परिश्रम करके सफलता प्राप्त करो।

16. 'राकेश पढ़ता है।' यह कैसा वाक्य है?
(a) साधारण वाक्य (b) संयुक्त वाक्य
(c) मिश्रित वाक्य (d) इनमें से कोई नहीं

17. इनमें से संयुक्त वाक्य को पहचानिए–
(a) राम पुस्तक पढ़ रहा है।
(b) शिल्पी पत्र लिखती है।
(c) धर्मेन्द्र ने भोजन किया।
(d) वह सुबह गया और शाम को लौट आया।

18. 'यदि परिश्रम करोगे तो, उत्तीर्ण हो जाओगे।' किस प्रकार का वाक्य है?
(a) सरल वाक्य/साधारण वाक्य
(b) संयुक्त वाक्य
(c) मिश्रित/मिश्र वाक्य
(d) इनमें से कोई नहीं

अध्याय 2

संधि

संधि

संधि शब्द का अर्थ है : मेल, संयोग, समझौता।

व्याकरण में संधि शब्द का प्रयोग एक तरह से वर्ण–विकार के अर्थ में किया जाता है। यह विकार वर्णों के मेल से ही होता है। जब दो शब्द पास–पास आते हैं, तब हम उच्चारण की सुविधा के लिए उन दोनों को पृथक–पृथक उच्चारित न करके उन्हें मिला देते हैं। इस प्रकार एक नया शब्द बन जाता है। शब्द के इस नए रूप के निर्माण में पहले शब्द के अंतिम अक्षर और दूसरे शब्द के पहले अक्षर का मेल होता है।

दो वर्णों के मेल से उत्पन्न विकार को व्याकरण में संधि कहते हैं। जैसे – विद्या + आलय = विद्यालय

संधि–विच्छेदः जो शब्द संधि से बने हैं, उनके खण्डों को अपने पूर्व रूप में रखना अथवा संधि को तोड़ना संधि–विच्छेद कहलाता है। जैसे –

देवर्षि = देव + ऋषि (अ + ऋ)
इत्यादि = इति + आदि (इ + आ)
रमेश = रमा + ईश (आ + ई)

संधि के प्रकारः संधियाँ तीन प्रकार की होती हैं –

1. स्वर संधि
2. व्यंजन संधि
3. विसर्ग संधि

स्वर संधि

स्वरों के पास–पास आने से जो संधि होती है, उसे स्वर–संधि कहते हैं। जैसे – रत्न + आकर = रत्नाकर। इसमें 'न' के 'अ' और आकर के 'आ' के स्थान पर एक दीर्घ 'आ' हो जाता है। इस उदाहरण में 'अ + आ' दोनों स्वर हैं। इसलिए यह स्वर–संधि है।

स्वर संधि के निम्नलिखित भेद हैं –

1. दीर्घ संधि
2. गुण संधि
3. वृद्धि संधि
4. यण् संधि
5. अयादि संधि

दीर्घ संधि

यदि प्रथम शब्द के अन्त में ह्रस्व अथवा दीर्घ अ, इ, उ, ऋ, में से कोई एक वर्ण हो और द्वितीय शब्द के आदि में उसी का समान वर्ण हो तो दोनों के स्थान पर एक दीर्घ हो जाता है। यह दीर्घ संधि कहलाती है। जैसेः

अ + अ = आ

परम + अर्थ = परमार्थ
पुस्तक + अर्थी = पुस्तकार्थी
देह + अंत = देहान्त
सूर्य + अस्त = सूर्यास्त
राम + अवतार = रामावतार
अस्त + अचल = अस्ताचल
गीत + अंजलि = गीतांजलि
चरण + अमृत = चरणामृत

अ + आ = आ

शिव + आलय = शिवालय
परम + आत्मा = परमात्मा
कुश + आसन = कुशासन
राम + आधार = रामाधार
परम + आनन्द = परमानन्द
परम + आवश्यक = परमावश्यक
भय + आकुल = भयाकुल

आ + अ = आ

कदा + अपि = कदापि
सेवा + अर्थ = सेवार्थ
युवा + अवस्था = युवावस्था
आज्ञा + अनुसार = आज्ञानुसार

आ + आ = आ

विद्या + आलय = विद्यालय
वार्ता + आलाप = वार्तालाप
प्रेक्षा + आगार = प्रेक्षागार

इ + इ = इ

कवि + इन्द्र = कवीन्द्र
रवि + इन्द्र = रवीन्द्र
अति + इत = अतीत
अधि + इक्षण = अधीक्षण
कपि + इन्द्र = कपीन्द्र

इ + ई = ई

गिरि + ईश = गिरीश
मुनि + ईश्वर = मुनीश्वर
रति + ईश = रतीश
परि + ईक्षण = परीक्षण

ई + इ = ई

मही + ईश = महीश
रजनी + ईश = रजनीश

उ + उ = ऊ

सु + उक्ति = सूक्ति
मृत्यु + उपरान्त = मृत्यूपरान्त

उ + ऊ = ऊ

मंजु + ऊषा = मंजूषा

ऊ + उ = ऊ

वधू + उत्सव = वधूत्सव

ऋ + ऋ = ऋ

मातृ + ऋणाम् = मातृणाम्

गुण संधि

यदि प्रथम शब्द के अन्त में ह्रस्व अथवा दीर्घ 'अ' हो और दूसरे शब्द के आदि में ह्रस्व अथवा दीर्घ 'इ उ ऋ' में से कोई वर्ण हो तो 'अ या आ' के बाद 'इ या ई' हो तो दोनों मिलकर 'ए', हो जाते हैं। उसी तरह उ या ऊ रहे तो दोनों मिलकर 'ओ', हो जाते हैं तथा ऋ रहे तो दोनों मिलकर अर् हो जाते हैं। यह गुण संधि कहलाती है। जैसे:

अ + इ = ए

देव + इन्द्र = देवेन्द्र
उप + इन्द्र = उपेन्द्र
नर + इन्द्र = नरेन्द्र
प्र + इत = प्रेत

अ + ई = ए

नर + ईश = नरेश
देव + ईश = देवेश
परम + ईश्वर = परमेश्वर

आ + इ = ए

महा + इन्द्र = महेन्द्र

आ + ई = ए

रमा + ईश = रमेश
महा + ईश्वर = महेश्वर

अ + उ = ओ

सूर्य + उदय = सूर्योदय
पर + उपकार = परोपकार
परम + उत्सव = परमोत्सव

अ + ऊ = ओ

जल + ऊर्मि = जलोर्मि

आ + उ = ओ

महा + उपदेश = महोपदेश
महा + उत्सव = महोत्सव

आ + ऊ = ओ

महा + ऊर्मि = महोर्मि

अ + ऋ = अर्

देव + ऋषि = देवर्षि
ब्रह्म + ऋषि = ब्रह्मर्षि

आ + ऋ = अर्

महा + ऋषि = महर्षि
राजा + ऋषि = राजर्षि

अपवादः
गुण संधि में अपवाद स्वरूप कुछ शब्द भी हैं।
जैसे – सुख + ऋत = सुखति; दश + ऋण = दशार्ण; प्र + ऊढ़ = प्रौढ़।

अध्याय 3

समास

समास

'समास' का शाब्दिक अर्थ होता है 'छोटा–रूप'। अतः जब दो या दो से अधिक शब्द (पद) अपने बीच की विभक्तियों का लोप कर जो छोटा रूप बनाते हैं, उसे समास, सामासिक शब्द या समस्त पद कहते हैं। समास प्रायः दो पद से बने होते हैं –

(i) पूर्वपद

(ii) उत्तरपद

किसी समस्त पद या सामासिक शब्द को उसके विभिन्न पदों एवं विभक्ति सहित पृथक् करने की क्रिया को समास का विग्रह कहते हैं।

जैसेः विद्यालय = विद्या के लिए आलय

माता–पिता = माता और पिता।

प्रधान खंड : जिस खंड पर अर्थ का मुख्य बल पड़ता है, उसे प्रधान खंड कहते हैं।

गौण खंड : जिस खंड पर अर्थ का बल नहीं पड़ता, उसे गौण खंड कहते हैं।

समास के प्रकार

समास को विस्तृत रूप से 6 भागों में बांटा जा सकता है:

1. अव्ययीभाव समास
2. तत्पुरुष समास
3. द्विगु समास
4. कर्मधारय समास
5. द्वन्द्व समास
6. बहुव्रीहि समास

अव्ययीभाव समास

जिस शब्द में पूर्वपद अव्यय हो, उसे अव्ययीभाव समास कहते हैं।

अव्ययीभाव समास में प्रायः

(i) पहला पद प्रधान होता है।

(ii) पहला पद या पूरा पद अव्यय होता है। (वे शब्द जो लिंग, वचन, कारक, काल के अनुसार नहीं बदलते, उन्हें अव्यय कहते हैं)

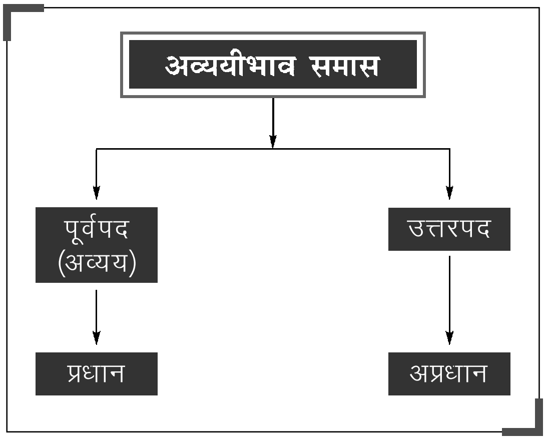

(iii) यदि एक शब्द की पुनरावृत्ति हो और दोनों शब्द मिलकर अव्यय की तरह प्रयुक्त हो, वहाँ भी अव्ययीभाव समास होता है।

(iv) संस्कृत के उपसर्ग युक्त पद भी अव्ययीभाव समास होते हैं।

जैसे –

यथाशक्ति = शक्ति के अनुसार

यथाशीघ्र = जितना शीघ्र हो

प्रतिदिन = प्रत्येक दिन

प्रत्येक = प्रति एक

प्रत्यक्ष = अक्षि के आगे

हाथों–हाथ = हाथ ही हाथ में

रातों–रात = रात ही रात में

बीचों–बीच = ठीक बीच में

साफ–साफ = बिल्कुल साफ

आमरण = मरने तक

भरपेट = पेट भरकर

निर्विवाद = बिना विवाद के

बाकायदा = कायदे के अनुसार